

प्रेषक,

महिमा,
उप सचिव,
उत्तराखण्ड शासन।

सेवा में,

निदेशक,
अकादमिक शोध एवं प्रशिक्षण,
उत्तराखण्ड।

माध्यमिक शिक्षा अनुभाग-3

देहरादून, दिनांक: 25 जनवरी, 2016

विषय: वित्तीय वर्ष 2015-16 में आवश्यकता से न्यून धनराशि प्राविधानित होने के कारण अतिरिक्त धनराशि की व्यवस्था हेतु पुनर्विनियोग के माध्यम से धनराशि की स्वीकृति के सम्बन्ध में।

महोदय,

उपर्युक्त विषयक आपके पत्र संख्या:अर्थ-1/3120/5क(15)/01/2014-15, दिनांक: 01 दिसम्बर, 2015 एवं पत्र संख्या अर्थ-1/3266/5क(15)/01/2014-15, दिनांक: 19 दिसम्बर, 2015के सन्दर्भ में मुझे यह कहने का निदेश हुआ है कि श्री राज्यपाल, महोदय अकादमिक शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान, देहरादून उत्तराखण्ड के वित्तीय वर्ष 2015-16 में आवश्यकता से न्यून धनराशि प्राविधानित होने के कारण छात्रावास के सफाई कर्मियों के माह अगस्त, 2015 से फरवरी, 2016 तक मानदेय भुगतान तथा संस्थान द्वारा समाचार पत्रों में प्रकाशित विज्ञापितियों के बिलों के भुगतान हेतु अतिरिक्त धनराशि की व्यवस्था पुनर्विनियोग के माध्यम से किये जाने हेतु संलग्न बी0एम0-09 प्रपत्र में उल्लिखित विवरणानुसार पुनर्विनियोग के माध्यम से अनुदान संख्या-11 के अधीन आयोजनागत पक्ष में उल्लिखित मानक मद 08-कार्यालय व्यय में धनराशि रु0 200 हजार (रुपये दो लाख मात्र) की धनराशि पुनर्विनियोग के माध्यम से स्वीकृत करते हुए व्यय करने की निम्नलिखित प्रतिबन्धों के अधीन सहर्ष स्वीकृति प्रदान करते हैं:-

- (क) अवमुक्त की जा रही धनराशि का व्यय उसी मद में किया जायेगा, जिसके लिए यह स्वीकृति दी जा रही है एवं व्यय करते समय विभागीय तथा वित्तीय नियमों/निर्देशों का पालन सुनिश्चित किया जायेगा। धनराशि का व्यय उत्तराखण्ड अधिप्राप्ति नियमावली 2008 के प्रतिबन्धों तथा अन्य वित्तीय नियमों के अधीन कय प्रक्रिया संपादित करते हुए किया जायेगा। कय प्रक्रिया का संपादन सक्षम स्तर के अधिकारी की अध्यक्षता में गठित कय समिति के माध्यम से निविदा की शर्तों के अधीन किया जायेगा।
- (ख) व्यय करने से पूर्व जिन मामलों में बजट मैनुअल, वित्तीय हस्त पुस्तिका के नियमों तथा अन्य स्थायी आदेशों के अन्तर्गत शासकीय अथवा अन्य सक्षम प्राधिकारी की स्वीकृति की आवश्यकता हों, उनमें व्यय करने से पहले ऐसी स्वीकृति अवश्य प्राप्त कर ली जाय।
- (ग) यह उल्लेखनीय है कि व्यय में मितव्ययिता नितान्त आवश्यक है व्यय करते समय मितव्ययिता के सम्बन्ध में समय-समय पर जारी शासनादेशों का अनुपालन सुनिश्चित किया जाय।
- (घ) स्वीकृत की जा रही धनराशि का व्यय वित्त विभाग के शासनादेश संख्या: 400/XXVII(1)/2015, दिनांक: 01.04.2015 एवं शासनादेश संख्या: 183/XXVII(1)/2012, दिनांक: 28.03.2012 में उल्लिखित प्राविधानों के अधीन किया जायेगा।



(ड) मितव्ययता के सम्बन्ध में जारी किये गये शासनादेशों अथवा भविष्य में जारी होने वाले शासनादेशों का विशेष रूप से पालन किया जायेगा।

2- इस सम्बन्ध में होने वाला व्यय चालू वित्तीय वर्ष 2015-16 के आय-व्ययक में अनुदान संख्या:-11 के अधीन आयोजनागत पक्ष के लेखा शीर्षक 2202-सामान्य शिक्षा, 02-माध्यमिक शिक्षा, 004-अनुसंधान तथा प्रशिक्षण के अधीन संलग्नक बी0एम0-09 प्रपत्र में उल्लिखित सम्बन्धित ब्यौरेवार शीर्षक/सुसंगत प्राथमिक इकाईयों के नामे डाला जायेगा।

3- यह आदेश वित्त विभाग के अशासकीय संख्या:321(P)XXVII(3)/2015-16, दिनांक:08 जनवरी, 2016 में प्राप्त उनकी सहमति से निर्गत किये जा रहे हैं

संलग्न :यथोक्त

भवदीया,
(महिमा)
उप सचिव।

पृष्ठांकन संख्या:2462(1)/XXIV-3/15/02(28)15TCतददिनांक।

प्रतिलिपि निम्नलिखित को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु प्रेषित:-

- 1- महालेखाकार,उत्तराखण्ड देहरादून।
- 2- निजी सचिव,मा0 मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड।
- 3- निजी सचिव,मा0 शिक्षा मंत्री,उत्तराखण्ड।
- 4- निजी सचिव,मुख्य सचिव, उत्तराखण्ड शासन।
- 5- निजी सचिव, सचिव विद्यालयी शिक्षा उत्तराखण्ड शासन।
- 6- समस्त जिलाधिकारी, उत्तराखण्ड।
- 7- निदेशक, कोषागार, 23-लक्ष्मी रोड़, डालनवाला, देहरादून।
- 8- समस्त कोषाधिकारी, उत्तराखण्ड।
- 9- बजट राजकोषीय नियोजन एवं संसाधन निदेशालय सचिवालय।
- 10- वित्त विभाग (अनुभाग-3) उत्तराखण्ड शासन।
- 11- कम्प्यूटर सेल, वित्त विभाग।
- ✓ 12- एन0आई0सी0 सचिवालय परिसर,देहरादून।
- 13- गार्ड फाइल।

आज्ञा से,
11/5/11
(महिमा)
उप सचिव।